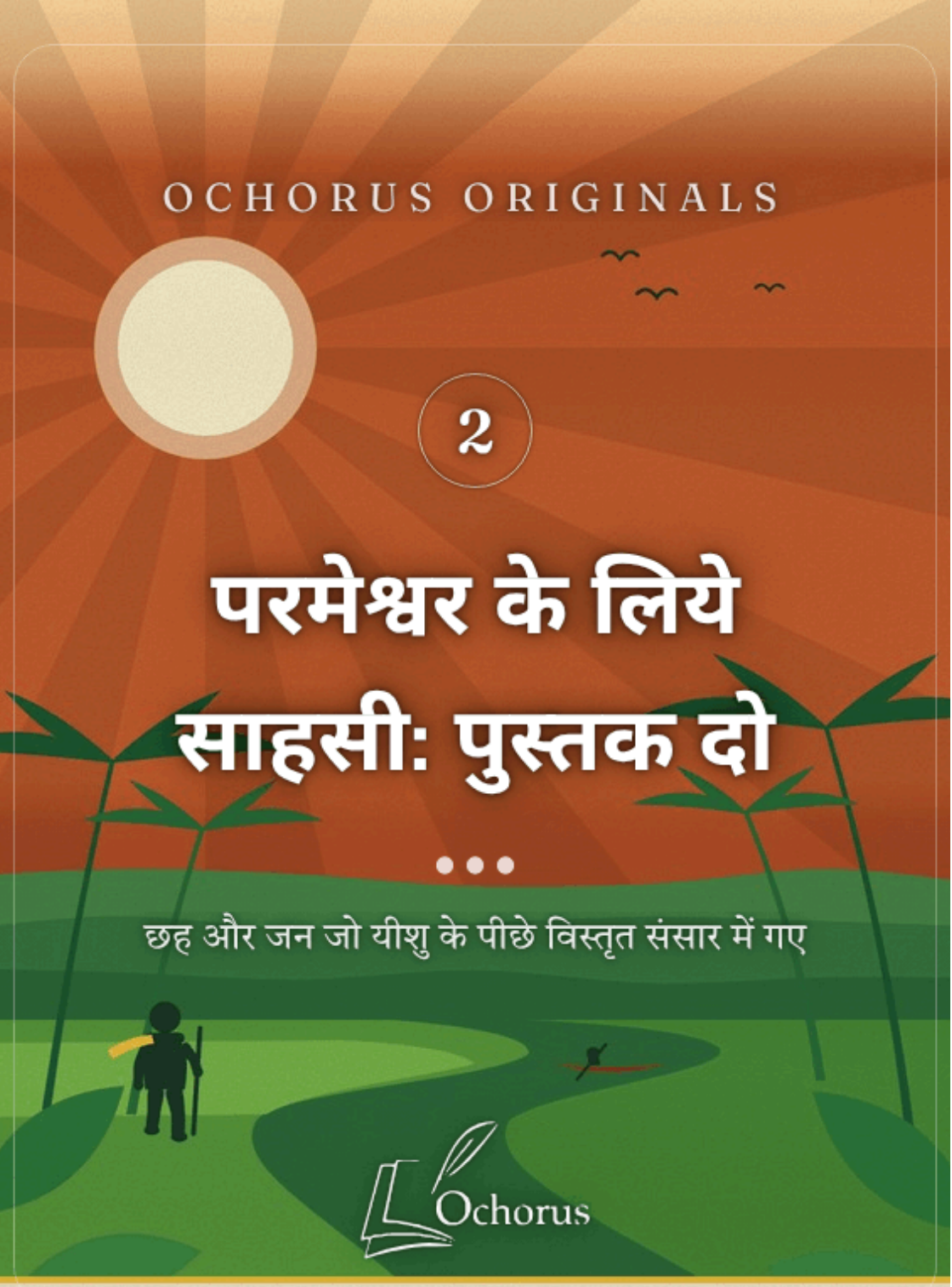
OCHORUS ORIGINALS

2

परमेश्वर के लिये साहसी: पुस्तक दो

छह और जन जो यीशु के पीछे विस्तृत संसार में गए



परमेश्वर के लिये साहसी: पुस्तक दो

छह और जन जो यीशु के पीछे विस्तृत संसार में गए

Ochorus Originals

OCHORUS

Ochorus के बारे में

मसीही विश्वास की महान क्लासिक कृतियों को दुनिया भर के चर्च के लिए मुफ़्त उपलब्ध कराना — उनकी अपनी भाषा में, परमेश्वर की महिमा के लिए।

Ochorus एक मसीही सेवकाई है, जिसके केंद्र विक्टोरिया (कनाडा) और कम्पाला (युगांडा) में हैं। 2021 से हम अतीत की महान मसीही पुस्तकें खोजते हैं, आज के पाठकों के लिए उनका सावधानी से संपादन करते हैं, और उन्हें मुफ़्त देते हैं — पढ़ने के लिए भी मुफ़्त और रखने के लिए भी मुफ़्त।

हम केवल एक वेबसाइट नहीं हैं। युगांडा में छपी पुस्तकें पूरे पूर्वी अफ़्रीका में सीधे लोगों के हाथों में पहुँचाई जाती हैं — पास्टरों के सम्मेलनों में, और उन कलीसियाओं, विद्यालयों और जेलों में जहाँ हमें सेवा के लिए बुलाया जाता है।

ochorus.com पर पढ़ना जारी रखें

- सैकड़ों क्लासिक पुस्तकें, उपदेश और जीवनियाँ — निःशुल्क, बिना विज्ञापन और बिना खाते के।
- अनेक भाषाओं में पुस्तकें — अंग्रेज़ी और स्वाहिली से लेकर अरबी और हिंदी तक।
- पढ़ने की योजनाएँ, हाइलाइट और नोट्स जो एक डिवाइस से दूसरे डिवाइस तक आपके साथ चलते हैं।
- ऊँची आवाज़ में सुनें, या किसी पुस्तक को ऑफ़लाइन पढ़ने के लिए सहेज लें।
- इस जैसी निःशुल्क डाउनलोड। इन्हें खुलकर बाँटें।

"तुम ने सेंत मेंत पाया है, सेंत मेंत दो।"

मत्ती 10:8

विषय-सूची

विलियम केरी: वह मोची जिसने हार नहीं मानी — 5

डेविड लिविंगस्टोन: वह मनुष्य जो अफ्रीका के पार चला — 7

फेस्टो किवेंगेरे: वह मनुष्य जिसने अपने शत्रु से प्रेम किया — 9

पंडिता रमाबाई: वह विदुषी जिसने भुलाए गए लोगों को बचाया — 11

कोरी टेन बूम: वह घड़ीसाज़ जिसने खदेड़े गए लोगों को छिपाया — 13

एरिक लिडेल: वह धावक जो रविवार को नहीं दौड़ा — 15

विलियम केरी: वह मोची जिसने हार नहीं मानी

विलियम केरी एक गरीब आदमी थे, जो इंग्लैंड के एक छोटे-से गाँव में जूतों की मरम्मत करते थे। वे उस तरह चतुर नहीं थे जैसे अमीर लोग होते हैं — उन्हें काम करने के लिए स्कूल जल्दी छोड़ना पड़ा था — पर उनका मन सीखने के लिए बहुत भूखा था। जब उनके हाथ चमड़ा सिलते रहते, तब वे अपनी कार्य-मेज़ पर टिकी किताबों से, एक-एक शब्द करके, खुद ही नई-नई भाषाएँ सीखते जाते थे।

अपनी कारीगरी की कोठरी की दीवार पर विलियम ने पूरी दुनिया का एक नक्शा टाँग रखा था, जिसे उन्होंने अपने ही हाथ से बनाया था और उस पर जगह-जगह छोटी-छोटी टिप्पणियाँ लिख रखी थीं। काम करते-करते वे दूर-दूर के बड़े देशों की ओर देखते — भारत, चीन, अफ्रीका, और समुद्र के टापू — जहाँ लाखों लोगों ने यीशु का नाम एक बार भी नहीं सुना था। और यह देखकर उनका मन दुःख से भर जाता था।

उन दिनों बहुत-से मसीही सोचते थे कि इसके बारे में कुछ किया ही नहीं जा सकता। वे कहते थे कि यदि परमेश्वर चाहेंगे कि वे दूर के लोग सुसमाचार सुनें, तो वे हमारी सहायता के बिना ही यह कर लेंगे। पर विलियम यह नहीं मानते थे कि परमेश्वर इस तरह काम करते हैं। वे अपने से बड़े और नामी लोगों के बीच खड़े हुए और एक ऐसी बात कही जिसने संसार को बदल दिया: *परमेश्वर से बड़ी-बड़ी बातों की आशा रखो; परमेश्वर के लिए बड़े-बड़े काम करने का साहस करो।*

फिर उन्होंने वह किया जो सबसे कठिन था — वे चल पड़े। विलियम जहाज़ से भारत गए, और वहीं वे अपने जीवन के बाकी सारे दिन, पूरे चालीस साल, रहे, और कभी अपने घर वापस नहीं लौटे। उन्होंने अपने ऊपर एक बहुत बड़ा काम ले लिया — बाइबल को भारत की भाषाओं में उतारना, ताकि लोग खुद अपनी आँखों से परमेश्वर के वचन पढ़ सकें। अपने साथियों के साथ मिलकर उन्होंने बाइबल का, पूरी या कुछ हिस्सों में, भारत की दर्जनों

भाषाओं में अनुवाद किया — इतनी भाषाओं में, जितनी बोलना सीखना भी अधिकांश लोगों के लिए मुश्किल होता।

उन्होंने सिर्फ़ अनुवाद ही नहीं किया। उन्होंने स्कूल खोले। उन्होंने बगीचे लगाए और भारत के पेड़-पौधों का अध्ययन किया। और उन्होंने एक क्रूर रिवाज़ के खिलाफ़, जिसमें विधवाओं को जीवित जला दिया जाता था, बड़ी हिम्मत से लड़ाई लड़ी और आखिरकार उसमें सफल भी हुए।

लोग विलियम केरी को आधुनिक मिशन-कार्य के पिता के रूप में याद करते हैं — वह जिसने कलीसिया को पूरी विशाल दुनिया के लिए जगा दिया। पर उन्होंने कभी खुद को कोई खास इंसान नहीं समझा। उन्होंने एक बार कहा था कि यदि कोई उन्हें याद रखे भी, तो बस इतना ही याद रखे कि वे एक ऐसे आदमी थे जो लगे रह सकते थे — जो बिना रुके आगे बढ़ते रहते और कभी हार नहीं मानते थे। और वे सचमुच लगे ही रहे, जब तक कि उनके अपने हाथ से बनाए नक्शे के वे दूर देश अपनी-अपनी भाषा में यह अच्छी खबर न पढ़ सकें।

डेविड लिविंगस्टोन: वह मनुष्य जो अफ्रीका के पार चला

अपने बाद आने वाली मैरी स्लेसर की भाँति, डेविड लिविंगस्टोन भी स्कॉटलैंड में एक निर्धन परिवार में पला-बढ़ा और जब वह केवल दस वर्ष का था तभी एक सूती मिल में काम करने लगा। उसने कातने की मशीन पर एक किताब खुली टाँग दी और काम करते-करते पढ़ता रहा, पहियों के शोर के बीच थोड़ा-थोड़ा ज्ञान बटोरता रहा। धीरे-धीरे उसने स्वयं इतना सीख लिया कि वह एक डॉक्टर बन सका।

डेविड लोगों को यीशु के विषय में बताने के लिये अफ्रीका गया, परन्तु शीघ्र ही उसने पाया कि वह एक ही स्थान पर चुपचाप बैठा नहीं रह सकता। वहाँ एक सम्पूर्ण विशाल महाद्वीप था जिसे उसके समय के नक्शे खाली छोड़ देते थे, जो ऐसे लोगों से भरा था जिनसे कोई बाहरी व्यक्ति कभी नहीं मिला था। इसलिये डेविड चल पड़ा। वह हज़ारों-हज़ार मील चला, रेगिस्तानों के पार और वनों में से होकर, पर्वतों के ऊपर से और बड़ी-बड़ी नदियों के किनारे-किनारे, इतनी दूर जितनी दूर उससे पहले लगभग कोई यात्री नहीं गया था।

परन्तु वह जितना अधिक चलता गया, उतना ही अधिक उसने एक भयानक बात देखी। जहाँ कहीं भी वह जाता, दास-व्यापारी लोगों को उनके घरों से चुरा रहे थे — माताओं को, पिताओं को, बच्चों को — और उन्हें जंज़ीरों में बाँधकर बेचे जाने के लिये ले जा रहे थे। डेविड ने दास-व्यापार को "संसार का खुला घाव" कहा, और उसे मिटाने में सहायता करना उसने अपने जीवन का कार्य बना लिया। उसने लिखा, बोला, और यात्राएँ कीं ताकि शक्तिशाली लोगों को लज्जित करके इसे रोकने पर विवश कर सके।

जिन अफ्रीकी लोगों के साथ डेविड रहा और यात्रा की, उनके बीच उसने गहरी मित्रताएँ बनाईं, और वे उससे प्रेम करते थे। वह प्रायः बीमार रहता, और प्रायः अकेला रहता, और एक-एक बार वर्षों तक घर से दूर रहता। वह अफ्रीका में ही मरा, अपने बिछौने के पास घुटनों के बल, मानो प्रार्थना करते-करते सो गया हो।

तब उसके अफ्रीकी मित्रों ने एक अद्भुत काम किया। वे नहीं चाहते थे कि उसका शरीर उस निर्जन प्रदेश में खो जाए। इसलिये उन्होंने उसे उठाया — अपने हाथों से, बारी-बारी से — और एक हज़ार मील से भी अधिक दूर समुद्र-तट तक ले गए, जो कई महीनों की यात्रा थी, ताकि उसे घर भेजा जा सके और आदर के साथ दफनाया जा सके। परन्तु पहले, क्योंकि वे जानते थे कि उसने उनकी भूमि से कितना प्रेम किया था, उन्होंने उसका हृदय अफ्रीका की मिट्टी में गाड़ दिया। और वहीं वह रह गया।

फेस्टो किवेंगेरे: वह मनुष्य जिसने अपने शत्रु से प्रेम किया

फेस्टो किवेंगेरे अफ्रीका के हृदय में बसे युगांडा की हरी-भरी पहाड़ियों पर मवेशी चराते हुए बड़े हुए। जब वे जवान थे, तब पूर्वी अफ्रीका में नए विश्वास की एक बड़ी लहर उठी, और उसी समय उनकी भेंट यीशु से हुई; और आनंद ने उनका मन इतना भर दिया कि वे उसे अपने भीतर रोक न सके। वे अपने देश के सबसे प्रिय प्रचारकों में से एक बन गए — कुछ लोग उन्हें "अफ्रीका का बिली ग्राहम" कहते थे।

परन्तु युगांडा पर एक अंधकारमय समय आया। ईदी अमीन नाम का एक क्रूर शासक सत्ता पर काबिज़ हो गया, और वह हर उस व्यक्ति से बहुत डरता था जो उसके आगे सिर नहीं झुकाता था। उसके सैनिकों ने बहुत से लोगों को पकड़ा और मार डाला, जिनमें वे मसीही भी थे जो सच बोलते थे। उन्हीं में से एक थे फेस्टो के अपने प्रिय मित्र, आर्चबिशप जनानी लुवुम, जिनकी हत्या इसलिए कर दी गई क्योंकि वे उस तानाशाह के सामने डटे रहे।

फेस्टो जानते थे कि अगली बारी शायद उन्हीं की हो। सैनिक उन्हें ढूँढ़ रहे थे। इसलिए एक रात वे और उनकी पत्नी वहाँ से भाग निकले, और अंधेरे में सीमा की खड़ी-ऊँची पहाड़ियों को पैदल पार करते हुए तब तक चलते रहे, जब तक कि वे सुरक्षित रूप से अगले देश में न पहुँच गए। उन्होंने अपना घर और अपना मित्र खो दिया था, और अपने प्राण भी लगभग गँवा ही बैठे थे।

अब, यदि फेस्टो ईदी अमीन से घृणा करते, तो हर कोई इसे समझ सकता था। परन्तु फेस्टो ने यीशु के क्रूस के नीचे कुछ सीखा था, जहाँ एक मरते हुए पुरुष ने प्रार्थना की थी, *हे पिता, इन्हें क्षमा कर।* घृणा के बदले फेस्टो ने प्रेम को चुना। उन्होंने तो एक पूरी पुस्तक भी लिखी, जिसका शीर्षक सुनकर लोग चकित रह गए: *मैं ईदी अमीन से प्रेम करता हूँ।* उनका यह अर्थ नहीं था कि वे क्रूर काम अच्छे थे — वे तो दुष्ट थे, और फेस्टो ने ऐसा कहा भी। उनका अर्थ यह था कि वे घृणा को अपने ही मन में पनपने नहीं देंगे, क्योंकि यीशु ने उन्हें क्षमा किया था, इसलिए वे भी क्षमा कर सकते थे।

फेस्टो किवेंगेरे ने अपना शेष जीवन इसी संदेश को सारे संसार में लेकर जाने में बिताया: कि परमेश्वर का प्रेम बुराई के सबसे बुरे काम से भी अधिक बलवन्त है, और यह कि एक शत्रु से भी प्रेम किया जा सकता है।

पंडिता रमाबाई: वह विदुषी जिसने भुलाए गए लोगों को बचाया

बहुत समय पहले भारत में अधिकांश लड़कियों को पढ़ना-लिखना बिलकुल नहीं सिखाया जाता था। परन्तु रमाबाई के पिता का विश्वास था कि एक लड़की भी सीख सकती है, और उन्होंने अपनी बेटी को उस देश की सबसे प्राचीन और सबसे कठिन पुस्तकें पढ़ाईं। उसने इतना कुछ सीखा कि जब वह बड़ी हुई, तो भारत के विद्वानों ने उसे एक विशेष उपाधि दी: *पंडिता*, जिसका अर्थ है "विदुषी।" किसी स्त्री को ऐसा सम्मान कभी नहीं मिला था।

परन्तु रमाबाई ने देखा था कि उसके देश में स्त्रियों और लड़कियों का जीवन कितना कठिन हो सकता था। जब किसी लड़की का पति मर जाता, तो अक्सर उसके साथ ऐसा बर्ताव किया जाता मानो वह दुःख उसी का दोष हो — इन "विधवाओं" को, जिनमें से कुछ तो केवल बच्चियाँ ही थीं, बहुत कष्ट सहना पड़ता था, और बहुतों की देखभाल करने वाला कोई भी नहीं था। और जब अकाल पड़ता और फ़सलें नष्ट हो जातीं, तो अनाथ और गरीब ही भूखे मरते थे।

रमाबाई यीशु की अनुयायी बन गई, और उसका विश्वास था कि प्रभु ने उसका सारा ज्ञान उसे केवल एक ही उद्देश्य के लिए दिया था: उन लोगों को बचाने के लिए जिन्हें भारत भुला चुका था। और उसने ठीक यही किया। वह अकाल के सबसे भयानक इलाकों में गई और सैकड़ों की संख्या में भूखी लड़कियों और अनाथों को इकट्ठा करके अपने घर ले आई।

उसने पुणे नगर के पास उनके लिए एक स्थान बनाया और उसका नाम रखा *मुक्ति*, जिसका अर्थ है "उद्धार।" वह एक विशाल घर बन गया, जहाँ हजारों बचाई गई स्त्रियों और बच्चों को भोजन, शिक्षा और प्रेम मिला, और उन्होंने काम-धंधे सीखे ताकि वे अपने पैरों पर खड़ी हो सकें। और विलियम केरी की तरह, रमाबाई ने भी अपने लोगों को पवित्रशास्त्र उन्हीं की भाषा में दिया, और पूरी बाइबल का अपनी मराठी भाषा में अनुवाद किया — यह कई वर्षों का परिश्रम था, जिसे उसने अपनी मृत्यु से ठीक पहले ही पूरा किया।

रमाबाई प्रसिद्ध हो गई, और जो लोग उसके विश्वास में सहभागी नहीं थे, वे भी उसके ज्ञान और गरीबों के लिए उसके अथक प्रेम के कारण उसका आदर करते थे। परन्तु प्रसिद्धि ने उसे कभी घमंडी नहीं बनाया। वह साधारण कपड़े पहनती, सादा भोजन करती, और उन्हीं स्त्रियों के साथ मिलकर काम करती जिन्हें उसने बचाया था, यहाँ तक कि वे उसकी सेविकाएँ नहीं, बल्कि उसका परिवार बन गईं।

पंडिता रमाबाई ने वह ज्ञान, जो उसे प्रसिद्ध बनाने के लिए था, ले लिया और उसका एक-एक कण उन विधवाओं और अनाथों पर लगा दिया जिनकी सहायता और कोई नहीं करता था।

कोरी टेन बूम: वह घड़ीसाज़ जिसने खदेड़े गए लोगों को छिपाया

कोरी टेन बूम हॉलैंड में अपने परिवार की घड़ी की दुकान के ऊपर रहती थी, जहाँ उसके पिता घड़ियाँ ठीक करते थे और उसे यह काम सिखाते थे। टेन बूम परिवार के लोग शांत और दयालु थे, जो परमेश्वर से प्रेम करते थे और अपने पड़ोसियों से भी प्रेम करते थे — और एक दिन उस प्रेम की एक भयानक परीक्षा हुई।

सेनाएँ हॉलैंड में घुस आई थीं, और उन पर ऐसे लोगों का शासन था जो यहूदियों को खोज-खोजकर पकड़ते थे, ताकि उन्हें बंदी बनाकर मार डालें — केवल इसलिए कि वे यहूदी थे। जब डरे हुए यहूदी परिवार घड़ी की दुकान का दरवाज़ा खटखटाते, तो टेन बूम परिवार ने उन्हें लौटाया नहीं। उन्होंने उन्हें भीतर लिया और छिपा लिया।

कोरी के साहसी साथियों ने उसके अपने शयनकक्ष की दीवार के पीछे एक गुप्त कमरा बनाया — इतनी चतुराई से कि कोई भी नहीं जान सकता था कि वह वहाँ है। जब सैनिक तलाशी लेने आते, तो छिपे हुए परिवार एक छोटे-से दरवाज़े से भीतर सरक जाते और उस सँकरी जगह में तब तक चुपचाप खड़े रहते, जब तक ख़तरा टल न जाता। इस तरह टेन बूम परिवार ने कई जानें बचाईं।

पर एक दिन किसी ने उनके साथ विश्वासघात किया। सैनिकों ने पूरे परिवार को बंदी बना लिया और कोरी तथा उसकी बहन बेट्सी को एक भयानक बंदी-शिविर में भेज दिया — ठंड, भूख और क्रूरता से भरी एक जगह। वहाँ भी दोनों बहनें दूसरे बंदियों को परमेश्वर के प्रेम के बारे में बताती रहीं, और बेट्सी बार-बार कहती थी कि कोई गड्ढा इतना गहरा नहीं जितना परमेश्वर का प्रेम उससे भी अधिक गहरा न हो। बेट्सी उसी शिविर में चल बसी। कोरी जीवित रही और मुक्त कर दी गई।

युद्ध के बाद कोरी सारी दुनिया में घूम-घूमकर अपनी कहानी सुनाती रही। सबसे कठिन घड़ी तब आई जब उसका आमना-सामना उस शिविर के उन क्रूर पहरेदारों में से एक से हुआ

— जो अब अपने किए पर पछता रहा था और अपना हाथ बढ़ा रहा था। उसके भीतर की हर बात चाहती थी कि वह मुँह फेर ले। पर उसे याद आया कि परमेश्वर ने उसे क्षमा किया है, और उसने उसे क्षमा करने की शक्ति के लिए प्रार्थना की — और उसने उसका हाथ थाम लिया। कोरी टेन बूम ने अपने लंबे जीवन का बाकी समय दुनिया को यही सिखाने में बिताया कि ऐसा कोई नहीं जिसे परमेश्वर क्षमा न कर सके, और ऐसी कोई पीड़ा नहीं जिसे उसका प्रेम चंगा न कर सके।

एरिक लिडेल: वह धावक जो रविवार को नहीं दौड़ा

एरिक लिडेल का जन्म चीन में हुआ था, जहाँ उसके माता-पिता लोगों को यीशु के विषय में बताने गए थे, और बड़ा होकर वह पूरे स्कॉटलैंड का सबसे तेज़ धावक बना। लोग कहते थे कि जब वह दौड़ता, तो अपना सिर पीछे किए और चेहरा आकाश की ओर उठाए दौड़ता, मानो केवल आनंद के लिए ही दौड़ रहा हो। एरिक मानता था कि उसकी तेज़ी परमेश्वर का दिया हुआ वरदान है, और उसे उसका उपयोग करना बहुत अच्छा लगता था।

1924 में एरिक अपने देश के लिए ओलंपिक खेलों में दौड़ने के लिए चुना गया, और सब को विश्वास था कि वह सौ मीटर की दौड़ जीतेगा। फिर समय-सारणी घोषित हुई, और एरिक का मन बैठ गया: उसकी दौड़ रविवार के दिन होनी थी। एरिक मानता था कि रविवार परमेश्वर का दिन है, विश्राम और आराधना का दिन, और उसने ठान लिया कि वह उस दिन नहीं दौड़ेगा — ओलंपिक के स्वर्ण पदक के लिए भी नहीं।

लोग क्रोधित हुए। अख़बारों ने उसे मूर्ख कहा। पूरे देश ने उससे आग्रह किया कि वह अपना विचार बदल ले। परन्तु एरिक न माना। इसलिए उसने इसके बदले एक दूसरी, लंबी दौड़ के लिए अभ्यास किया, चार सौ मीटर की, जो उसकी सबसे अच्छी दौड़ नहीं थी और जिसमें किसी को उसके जीतने की आशा न थी।

उस दौड़ के दिन किसी ने एरिक के हाथ में चुपके से एक पर्ची थमा दी। उसमें लिखा था कि परमेश्वर उनका आदर करता है जो उसका आदर करते हैं। एरिक ऐसे दौड़ा मानो उसके पैरों में पंख लगे हों — और उसने न केवल स्वर्ण पदक जीता, बल्कि ओलंपिक कीर्तिमान भी तोड़ दिया। जिस लड़के ने अपनी सबसे अच्छी दौड़ छोड़ दी थी, उसे उससे भी अच्छी दौड़ दी गई।

परन्तु सबसे आश्चर्यजनक बात इसके बाद हुई। अपनी प्रसिद्धि के चरम पर, जब वह कुछ भी पा सकता था, एरिक ने यह सब त्याग दिया और एक मिशनरी और शिक्षक के रूप में सेवा करने के लिए चीन लौट गया। वर्षों बाद, एक भीषण युद्ध के समय, वह एक भरे हुए

बंदीगृह में बंद कर दिया गया। वहाँ वह सब का मित्र और सहायक बन गया — बच्चों को खेल और पाठ सिखाता, बीमारों को उठाकर ले जाता, और अपने भोजन का थोड़ा-सा हिस्सा भी बाँट देता। दूसरों की देखभाल करते-करते थककर वह उसी बंदीगृह में मर गया, और पूरे बंदीगृह ने उसका शोक मनाया। एरिक लिडेल ने अपनी आखिरी और सबसे अच्छी दौड़ दौड़ ली थी — पदक के लिए नहीं, बल्कि परमेश्वर के और अपने चारों ओर के हर एक के प्रेम के लिए।

यह AI द्वारा किया गया अनुवाद है, जिसकी किसी मूल भाषी द्वारा समीक्षा होना अभी बाकी है। यह लेखक का मूल पाठ नहीं है।

© Ochorus. युवा पाठकों के लिए लिखी गई Ochorus की मौलिक कृति। इसे निःशुल्क पढ़ें और साझा करें।

यह अनुवाद Ochorus ने तैयार किया है, जो मसीही क्लासिक पुस्तकों का एक निःशुल्क पुस्तकालय है।

Scripture quotations are from the Indian Revised Version (IRV), © 2017–2019 Bridge Connectivity Solutions, licensed under CC BY-SA 4.0 (https://creativecommons.org/licenses/by-sa/4.0/).

इसे ऑनलाइन, निःशुल्क पढ़ें: https://ochorus.com/hi/books/brave-for-god-2/

और निःशुल्क क्लासिक पुस्तकें: ochorus.com